किसी भी देश या समाज का सच्चा विकास तभी संभव है जब वहां की महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। प्राचीन काल से ही भारत में महिलाओं को शक्ति का प्रतीक माना गया है लेकिन बीच के कुछ दशकों में समाज में कई तरह की कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया था जिससे महिलाओं की स्थिति काफी कमजोर हो गई थी। आज के आधुनिक भारत में महिला सशक्तिकरण एक बहुत ही महत्वपूर्ण और गंभीर विषय बन चुका है। हमारे देश की कुल आबादी का लगभग 48 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं का है और अगर यह आधा हिस्सा विकास से पीछे रह जाएगा तो देश कभी भी पूरी तरह से तरक्की नहीं कर पाएगा। पिछले 20 सालों में शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों ने बहुत शानदार प्रदर्शन किया है। आज देश में महिलाओं की साक्षरता दर लगभग 65 से 70 प्रतिशत तक पहुंच गई है जो पहले के मुकाबले काफी बेहतर है। हर साल 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में लड़कियों का पास प्रतिशत लड़कों की तुलना में 5 से 10 प्रतिशत अधिक रहता है। सरकार ने भी लड़कियों की शिक्षा और उनके विकास के लिए कई बड़ी और सफल योजनाएं चलाई हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजना के कारण आज कई राज्यों में लिंगानुपात में बहुत सुधार देखने को मिला है और अब 1000 लड़कों पर 1020 लड़कियों का आंकड़ा दर्ज किया गया है जो एक बहुत ही सकारात्मक और बड़ी खबर है। इसके अलावा सुकन्या समृद्धि योजना के तहत लगभग 3 करोड़ से अधिक नए बैंक खाते खोले गए हैं जिनमें माता पिता अपनी बेटियों के भविष्य और उनकी पढ़ाई के लिए पैसा जमा कर रहे हैं। आज भारत की महिलाएं केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं हैं बल्कि वे राजनीति विज्ञान खेल व्यापार और सेना जैसे हर क्षेत्र में अपनी कामयाबी का परचम लहरा रही हैं। हमारी सेना में भी अब महिलाओं को लड़ाकू विमान उड़ाने और युद्धपोतों पर तैनात होने की मंजूरी मिल गई है। हाल ही में हुए ओलंपिक और कॉमनवेल्थ खेलों में भी भारत के कुल पदकों में से लगभग 40 प्रतिशत पदक हमारी महिला खिलाड़ियों ने ही जीते हैं। गांवों में रहने वाली महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए 50 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूह बनाए गए हैं जिनसे लगभग 6 करोड़ महिलाएं सीधे तौर पर जुड़ी हुई हैं। इन समूहों के माध्यम से महिलाएं अपना खुद का छोटा व्यापार शुरू कर रही हैं और हर महीने 10000 से 15000 रुपये आसानी से कमा रही हैं। पंचायत चुनावों में भी महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत तक सीटें आरक्षित की गई हैं ताकि वे गांव के विकास में अपना सीधा योगदान दे सकें। डिजिटल इंडिया अभियान के तहत भी ग्रामीण महिलाओं को कंप्यूटर और इंटरनेट की ट्रेनिंग दी जा रही है। अब तक लगभग 2 करोड़ ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल रूप से साक्षर बनाया जा चुका है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी मातृत्व वंदना योजना जैसी नीतियों के तहत हर साल लगभग 1 करोड़ गर्भवती महिलाओं को 6000 रुपये की आर्थिक सहायता सीधे उनके बैंक खातों में दी जाती है ताकि वे अपना और अपने बच्चे का अच्छा पोषण कर सकें। 18 साल से कम उम्र की लड़कियों के लिए स्कूलों में मुफ्त किताबें और साइकिल बांटने की योजनाएं भी कई राज्यों में बहुत सफलता के साथ चल रही हैं।